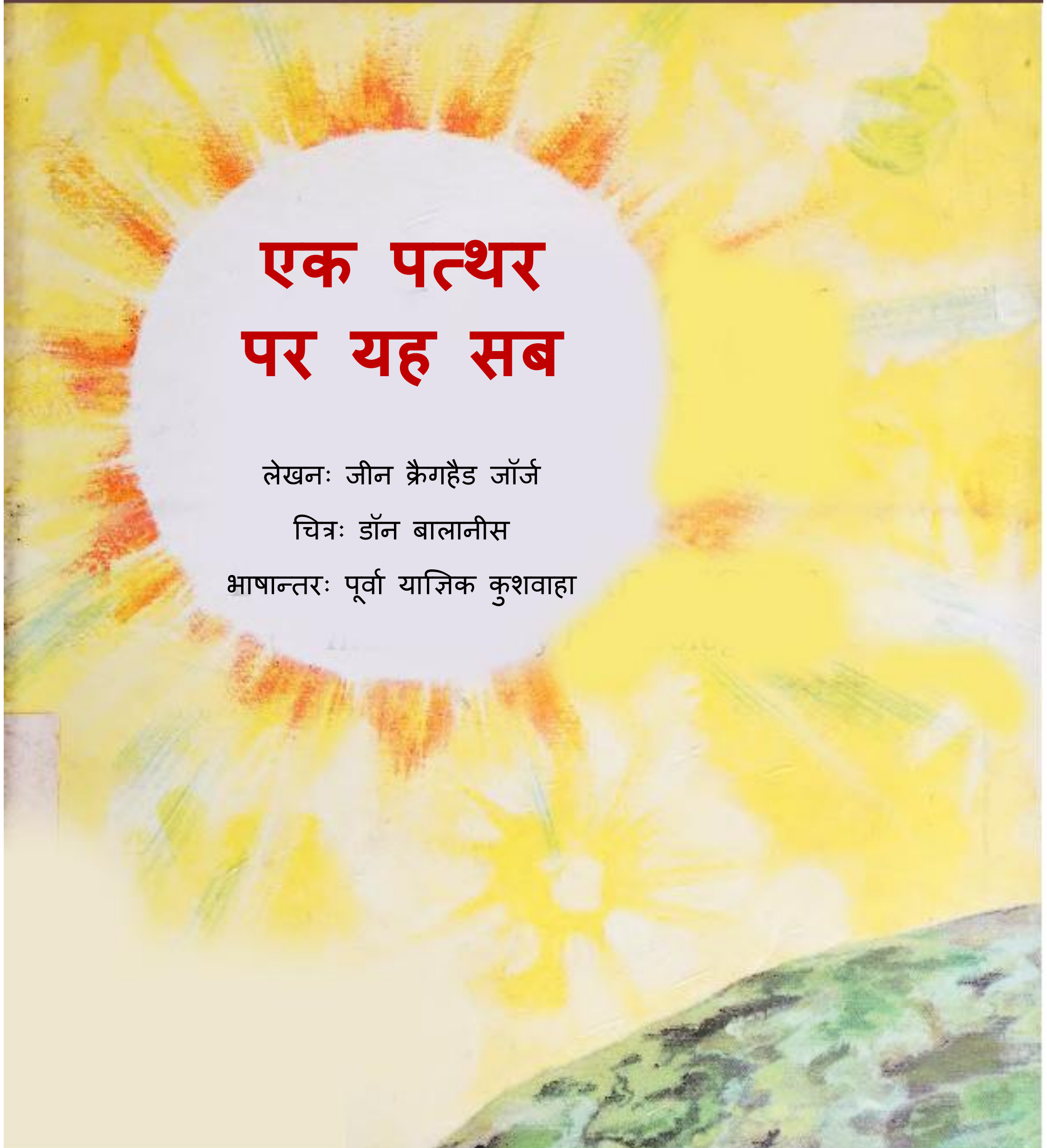


एक पत्थर पर यह सब

लेखनः जीन क्रैगहैड जॉर्ज

चित्रः डॉन बालानीस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जंगल में एक जलधारा के पास एक साधारण-सा पत्थर था जो आकार में एक भालू जितना बड़ा था और बरसाती बादलों-सा सुरमई। पहली नज़र में वह दूसरे पत्थरों जैसा ही शान्त और स्थिर लगता था। पर उस पत्थर पर विविध प्रकार के शैवालों (फर्न) का जंगल था और किस्म-किस्म की काई के बाग थे। वह अनेकों मक्खियों, पत्थर पर रहने वाले घोंघों, परी-झींगाओं और एक भूमिगत झींगुर का घर था। यह सब एक लघु समुदाय बनाता था जो जीवन से ओत-प्रोत था।

अत्यधिक स्नेह और उत्साह से जीन क्रैगहैड जॉर्ज व डॉन बोलोनीस बाल-आकार के इस प्राकृतिक जगत की प्रचुरता का जश्न मनाते हैं। वे एक छोटे से भूमिगत झींगुर के अपने जैसे दूसरे झींगुरों को तलाशने के दौरान हुए साहसिक कारनामों को दर्ज करते हैं। वह भूमिगत झींगुर उस पुराने घिसे हुए पत्थर के नीचे की ज़मीन से निकल उसके शीर्ष तक पहुँचता है। छोटे बच्चों को यह कथा आनन्द देगी। वे जानेंगे कि एक सामान्य पत्थर पर कितने प्रकार के जीव पनप सकते हैं।



एक पत्थर पर यह सब

लेखनः जीन क्रैगहैड जॉर्ज, चित्रः डॉन बालानीस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक पत्थर पर यह सब

इस क़िताब का हरेक चित्र दरअसल एक समग्र चित्र का बारीक हिस्सा है, जो पुस्तक के अन्त में दिया गया है। कलाकार ने जिस दृश्य तकनीक का उपयोग किया है वह पत्थर के सूक्ष्म जगत की एकता को प्रतिबिम्बित करती है। मूल चित्र 3 फीट गुणा 4 फीट के कैनवास पर एक्रैलिक रंगों से बनाया गया था। पुस्तक के सारे चित्र उस मूल चित्र में पाए जा सकते हैं।

जंगल की जलधारा के पास एक पुराना, घिसा-घिसाया पत्थर है। उसका आकार एक भालू जितना बड़ा है और उसका रंग बरसाती बादलों-सा सुरमई है। उसके हरेक गड्ढे और उभार पर काई के बाग उगे हुए हैं। उसके बगल में उगे पर्णांग (फर्न) लेसदार छाया डालते हैं। उसके ऊपरी हिस्से के गड्ढे में पानी किसी नन्हे ताल-सा पसरा हुआ है। इस ताल के पास एक तितली बैठी है।

जलधारा के पास जंगल में पड़ा वह पत्थर एक छोटे से देश जैसा है, जिसके अपने जंगल, वादियाँ और झीलें हैं। वहाँ बसने वाले जीव वहीं अपना जीवन बिताते हैं, वे उसी पत्थर पर शिकार करते हैं, सोते हैं, अपना काम करते हैं।

गर्मियों के एक दिन भोर होती है।



पत्थर के नीचे गहराई में एक भूमिगत झींगुर हिलता है।

उसकी पीठ को रोंएंदार बाल ढ़के हुए हैं, मानो उसकी खाल हों। उसके अगले पैर छोटे फावड़ों जैसे है। वह उनकी मदद से मिट्टी खोद कर अपना शिकार करता है।

वह पत्थर के नीचे की ज़मीन में अकेला रहता और अपना काम करता है। वह पेट से साँस लेता है, अपने घुटनों से सुनता है, अपने एंटीना से सूंघता है, और अपनी आँखों के हज़ारों हिस्सों से देखता है।

बसन्त में अंडे से निकलने के बाद से उसके घुटनों ने किसी दूसरे भूमिगत झींगुर को नहीं सुना है। न उसके एंटीना ने किसी दूसरे झींगुर को सूंघा है।



अब गर्मी के इस दिन उसके एंटीना तने हुए हैं वह किसी दूसरे भूमिगत झींगुर की गंध पाने की कोशिश में है। वह जड़ों के बीच फावड़ों जैसे पैरों से सुरंग खोदते, अपनी जैसी रोएंदार पीठों और अपने जैसे घुटनों को तलाशते, वह पत्थर के नीचे आ जाता है।



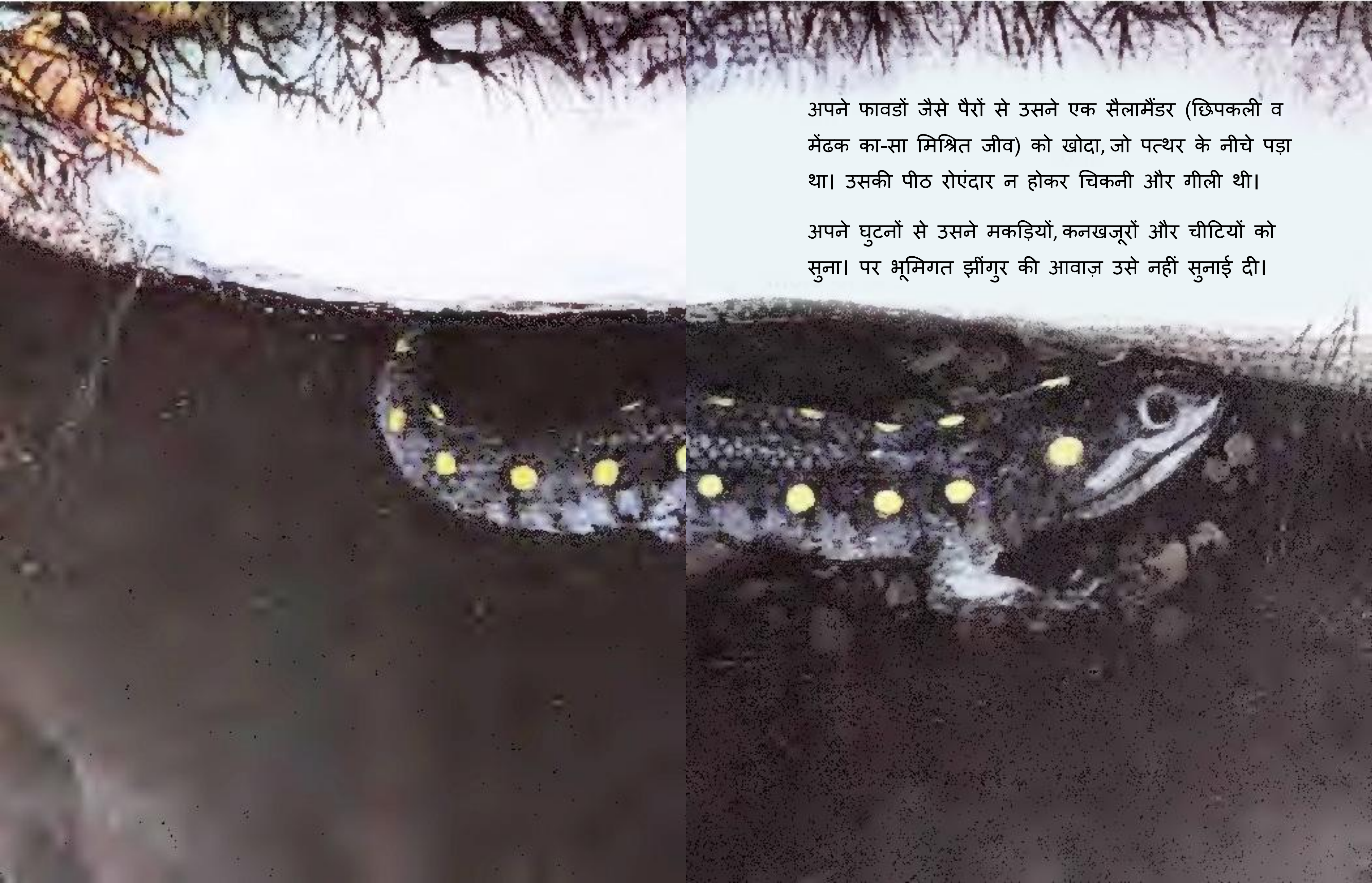
वहाँ उसे लकड़ी में बसने वाल जूँ मिली। उसने अपने एंटीना से उसे धीमे से छुआ। पर यह तो भूमिगत झींगुर था ही नहीं। जूँ ने अपना सिर झुकाया, अपनी टांगें मोड़ीं और खुद को एक गेंद में बदल लिया।



वह कुछ और आगे बढ़ा उसने सुनने के लिए अपना घुटना उठाया ताकि अन्य भूमिगत झींगुरों की चटचटाहट सुन सके।

उसे एक भृंग मिला। वह किटकिटाया। झींगुर आगे बढ़ा।





अपने फावडों जैसे पैरों से उसने एक सैलामैंडर (छिपकली व मेंढक का-सा मिश्रित जीव) को खोदा, जो पत्थर के नीचे पड़ा था। उसकी पीठ रोएंदार न होकर चिकनी और गीली थी।

अपने घुटनों से उसने मकड़ियों, कनखजूरों और चीटियों को सुना। पर भूमिगत झींगुर की आवाज़ उसे नहीं सुनाई दी।

उसने धरती की सतह तक सुरंग खोद डाली और पत्थर के किनारे तक पहुँच गया।

हज़ारों प्रकाश किरणों ने उसकी आँखों को चुंधिया दिया। उसने फौरन अपना सिर अपने भूरे फावड़ों सरीखे पैरों के बीच छिपा लिया। अपनी दोनों आँखों को ढ़क, वह पत्थर पर जमी काई की सतह पर बढ़ा।



वह बहुत ही आहिस्ता-आहिस्ता पत्थर पर चढ़ा।

उसने रेशम की सी सरसराहट सुनी। वह काई में उस आवाज़ का पीछा करता बढ़ा। एक लक्कड घोंघा अपने बड़े पैरों से आगे सरक रहा था। वह जिस राह से बढ़ रहा था उस पर एक रुपहला निशान छूटता जा रहा था। भूमिगत झींगुर जल्दी से आगे बढ़ा।





वह एक पर्णांग (फर्न) के नीचे सुस्ताने रुका। उसके एंटीना ने एक लुभावनी महक पकड़ी।

उसने अपनी आँखों के हज़ारों हिस्सों से देखा। यह क्या, यह तो बस एक जुगनू था जो गोधूलि वेला के इन्तज़ार में पर्णांग के पत्तों में सो रहा था। वही तो उसके उड़ने और चमकने का समय था।

झींगुर अपने छहों पैरों को बढ़ाता आगे चला।



पत्थर के चूरे से भरे एक गड्ढे के किनारे रुक उसने फिर से सुनने की कोशिश की। उसे चटचाहट के बदले धम-धमाक की आवाज़ें आईं। श्रमिक चीटियाँ रेत के कणों को एक पर एक रख रही थीं। यह आवाज़ बड़ी ज़ोरदार थी।

आखिरकार वह पत्थर के एक गड्ढे में बने ताल तक पहुँचा। उसे किसी भूमिगत झींगुर की सी बू आई।

वह उत्तेजित हो उठा। वह झपाक से पानी में कूदा और पानी में कुछ ऐसे तैरा मानो वह ज़मीन पर ही बढ़ रहा हो।





तैरते समय वह परी झींगा मछली के पास से गुज़रा। वे उससे दूर उलटी ही भागीं। क्योंकि वे इसी तरह उलटी, अपने पीठ पर जीती हैं।

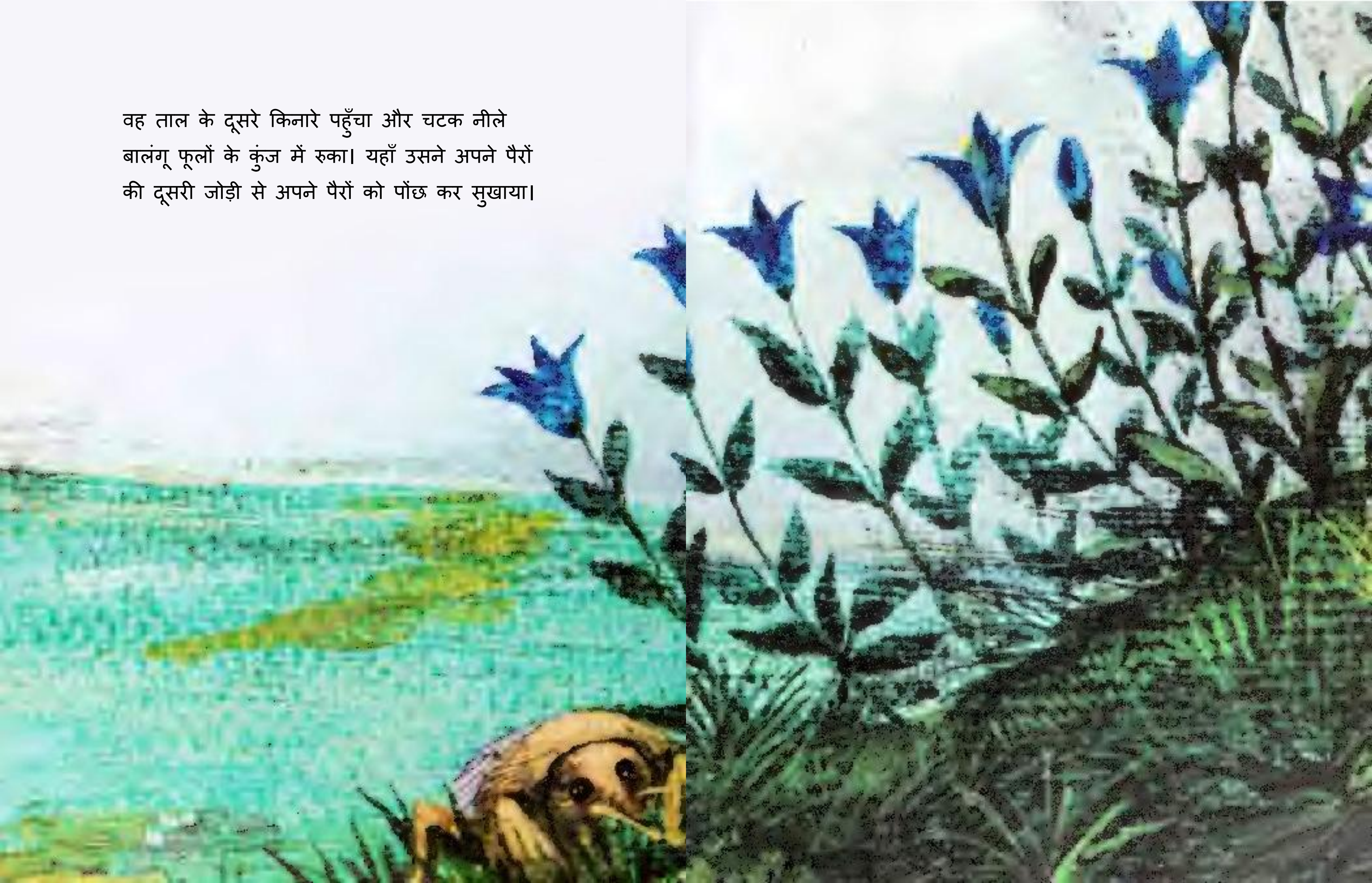


युवा मच्छर ताल के तल तक भागे। भूमिगत झींगुर के फावड़े काई, घूर्णी (रोटिफर), और ताज़ेपानी की जैलीफिश से टकराए। कुछ आगे वे ताज़े पानी के स्पंज से टकराए।

पर उसे दूसरे भूमिगत झींगुर नहीं मिले।

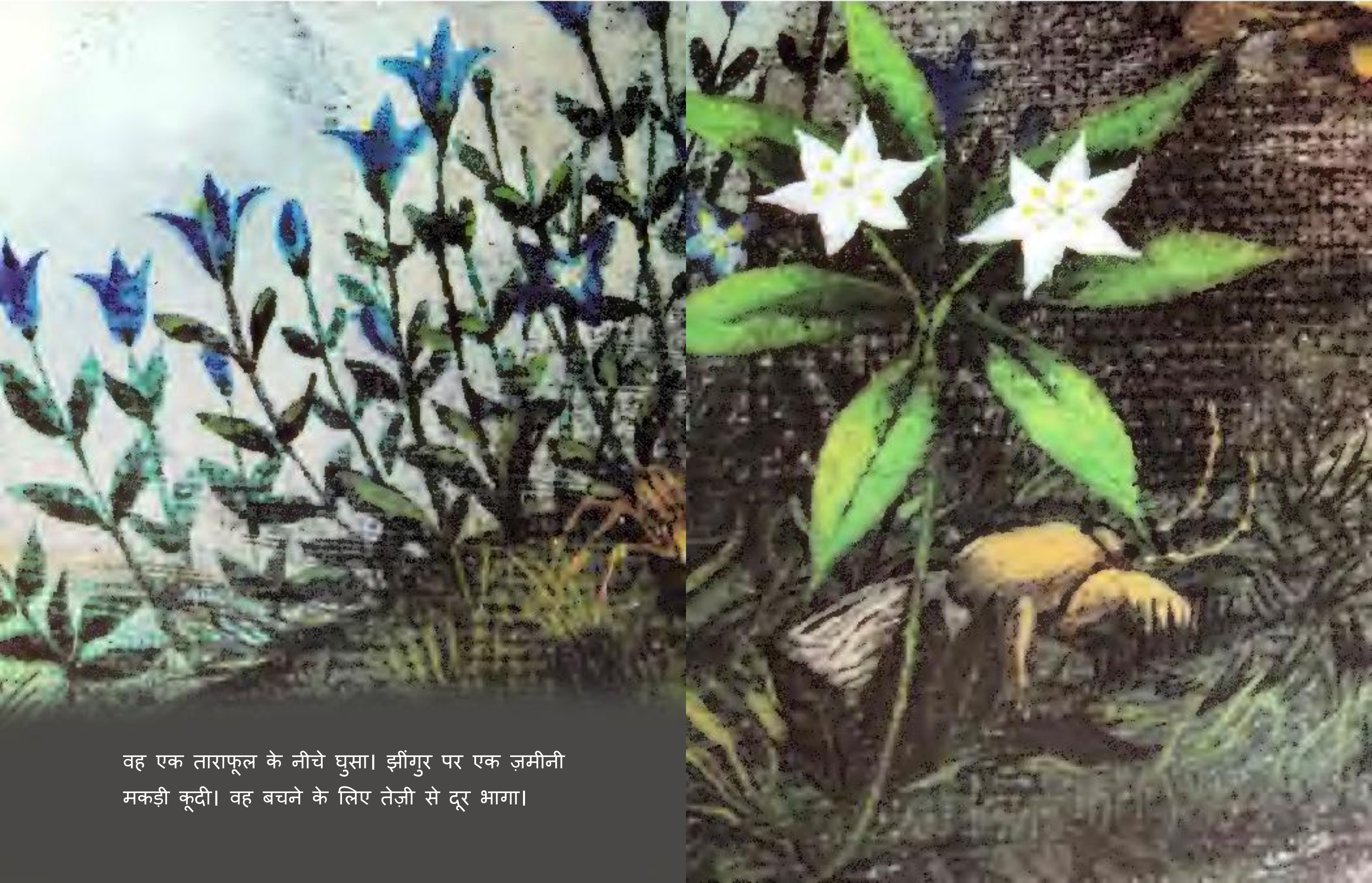


वह ताल के दूसरे किनारे पहुँचा और चटक नीले बालंगू फूलों के कुंज में रुका। यहाँ उसने अपने पैरों की दूसरी जोड़ी से अपने पैरों को पोंछ कर सुखाया।

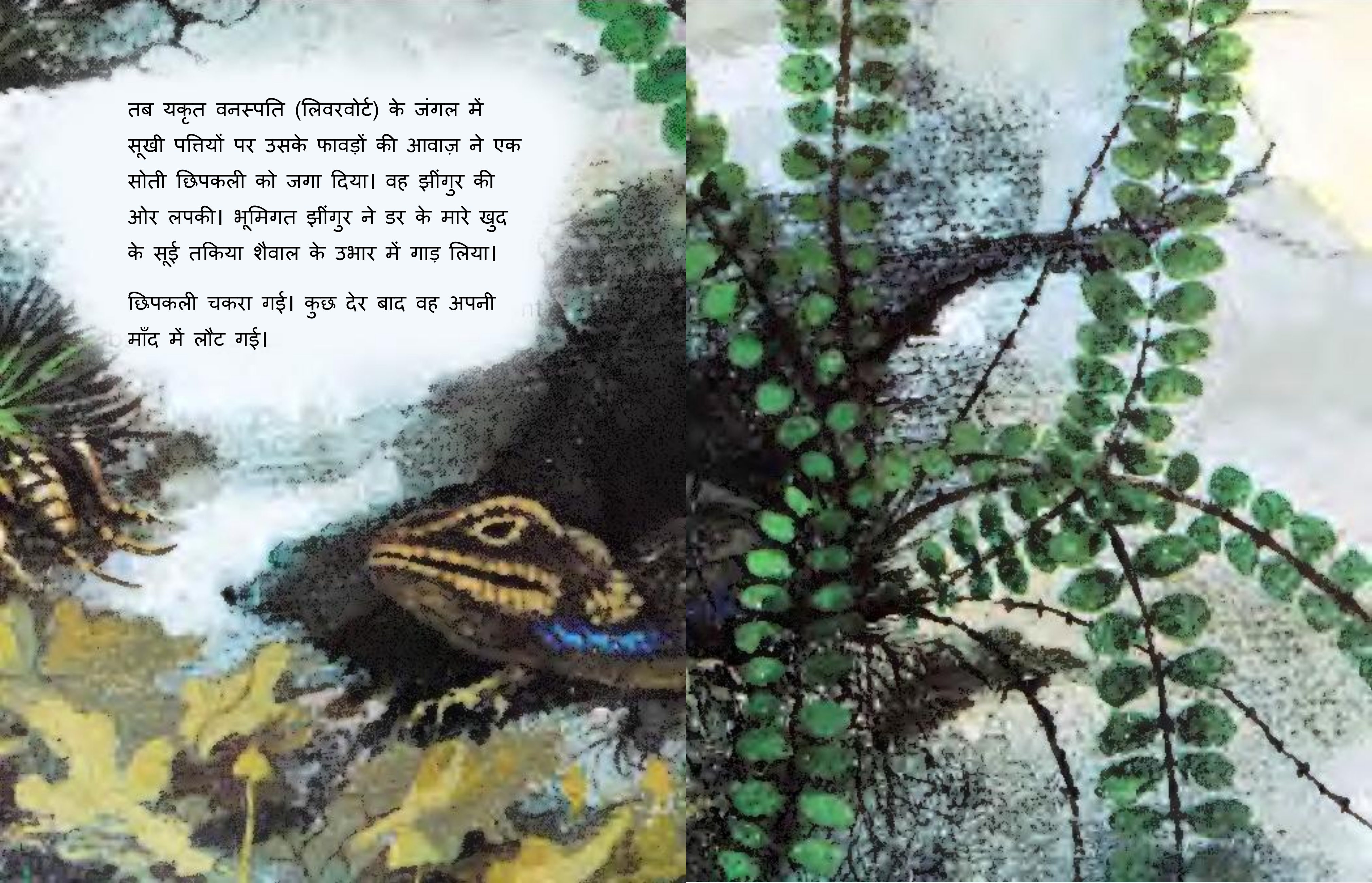


रुपहले पंख कौंधे। भूमिगत झींगुर ने अपने घुटने उठाए। पर उसे अश्म मक्षी (स्टोन फ्लाइज़) की खड़खड़ाहट के सिवा कुछ सुनाई नहीं दिया। ये मक्खियाँ पत्थर के पास वाली जलधारा में जन्मी थीं और अब बालंगू के कुंज में नाच रही थीं।





वह एक ताराफूल के नीचे घुसा। झींगुर पर एक ज़मीनी मकड़ी कूदी। वह बचने के लिए तेज़ी से दूर भागा।



तब यकृत वनस्पति (लिवरवोर्ट) के जंगल में सूखी पत्तियों पर उसके फावड़ों की आवाज़ ने एक सोती छिपकली को जगा दिया। वह झींगुर की ओर लपकी। भूमिगत झींगुर ने डर के मारे खुद के सूई तकिया शैवाल के उभार में गाड़ लिया।

छिपकली चकरा गई। कुछ देर बाद वह अपनी माँद में लौट गई।

भूमिगत झींगुर खोदता रहा। जल्द ही वह बाहर धूप में निकल आया। उसने पाया कि वह पत्थर के ठेठ ऊपर आ चुका है। वहाँ हर ओर काई थी, और वह जगह बरसात पड़ने से चिकनी बन चुकी थी।

उसने सुना और देखा।

उसके घुटनों को किसी भूमिगत झींगुर की आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसकी आँखों के हज़ारों हिस्सों में कोई रोंएदार पीठ नहीं चमकी।



उसने विलाप करना शुरू किया। अपने एक पंख को दूसरे में फंसा उसने अपने चीत्कार को काटा।

वह चटचटाया। उसने अपनी चटचटाहट से अपने अकेलेपन का इज़हार किया। चटचटाहट से अपना अता-पता बताया। दूसरे भूमिगत झींगुरों को उनकी सोहबत की ज़रूरत बताई।



तब अचनक पत्थर पर एक भूमिगत झींगुर आ गिरा। पेड़ों के बीच तेज़ी से बढ़ता दूसरा झींगुर आया। जलधारा के पास से उड़ तीसरा, चौथा, तब पाँचवाँ, छठा और सांतवाँ झींगुर आ पहुँचा।



वे उस तरह इकट्ठे हुए जैसे भूमिगत झींगुर होते हैं। सहवास करने नहीं, ना ही खाने के लिए। बल्की उन कारणों से जो काई नहीं जानता। अपने समूचे जीवन भर अकेले रहने के बाद वे ज़मीन के नीचे वाले अपने घर को छोड़ कर आते हैं। उत्सव की एक रात निकल वे एक-दूसरे के पास दौड़े आते हैं। अन्य भूमिगत झींगुरों के साथ नाचते हैं, चटचटाते हैं, एक-दूसरे को छूते हैं।





ज़मीन में रहने वाला हमारा झींगुर भी उनके पास आया। उसके घुटनों ने वह मोहक चटचटाहट सुन ली। उसने अपने जैसे दूसरे झींगुरों की खुशबू पा ली। उसने रोएंदार पीठें देख लीं।

वह उनके बीच घुला-मिला। उनसे टकराया, उन्हें छुआ, उन पर चढ़ा। उसने गाया, चक्कर खाए, और चटचटाया। वह पूरी रात झींगुरों की आवाज़ पर नाचता रहा।





तब वह स्थिर बैठ गया। वह थक चुका था। बहुत ही ज़्यादा शोर हुआ था सबके चटचटाने से, कई पीठें थीं, अनेकों घुटने थे और ज़रूरत से ज़्यादा आँखें थीं।

वह बदहवास-सा पत्थर पर से उड़ा। और लौट कर जाते दूसरे झींगुरों से टकराया।

वह उड़ता हुआ धरती के पास आया। सतह की चिकनी मिट्टी पर बैठा। उसने ज़मीन खोद सुरंग बनाई और शान्ति की ओर दौड़ा। दूसरे झींगुरों की रोएंदार पीठ से दूर भागा। उनके शरीर की महक से दूर हुआ।

वह खोदता हुआ पत्थर के नीचे एक शान्त जगह पहुँचा।



उसकी इन्द्रियों ने उसे बताया कि उसे धरती की गहराई में मिलने वाला सुकून अच्छा लगता है। उसे वहाँ की चुप्पी, अंधेरा और काली मिट्टी पसन्द है, जो उसके शरीर से चिपकी होती है।



अपने घर लौटने बाद उसने पेट से उसाँस छोड़ी। अपने एंटीना नीचे खींचे, और पत्थर नीचे आराम करने पसर गया।



लेखिका के विषय में

ऑल अपॉन अ स्टोन की प्रेरणा **जीन जॉर्ज** को अपने बच्चों से मिली। जब वे बहुत छोटे थे, वे घंटों जंगल में घूमते और वहाँ पत्थरों के नीचे, ऊपर, तथा इर्द-गिर्द रहने वाले जीवों की छानबीन करते। छोटे बच्चों को ये नन्हे समुदाय सही आकार की दुनिया सरीखे लगते। श्रीमति जॉर्ज कई मशहूर बाल पुस्तकों की लेखिका हैं, उनकी हरेक कृति ने प्रकृति तथा छोटे बच्चों के प्रति उनकी संवेदनशीलता की पुष्टि की है।

चित्रकार के विषय में

डॉन बोलोनीस का जन्म न्यू यॉर्क में हुआ। उन्होंने कूपर युनियन स्कूल ऑफ आर्टस् से स्नातक किया और अब वे वहीं पढ़ाते भी हैं। श्री बोलोनीस ने अनेक बाल पुस्तकों को चित्र दिए हैं। इनमें *वाशिंगटनस् बर्थडे, क्रौवल हॉलिडे बुक* तथा क्लाइड रॉबर्ट बुला की रचना *द घोस्ट ऑफ विन्डी हिल* शामिल हैं।

डॉन बोलोनीस और उनका परिवार ब्रुकलिन, न्यू यॉर्क में रहते हैं, पर गर्मियाँ वरमॉन्ट में बिताते हैं, जहाँ उनका पसन्दीदा काम है जंगली कुकुरमुत्तों को तलाशना।

